GLOBAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY STUDIES ISSN:- 2348-0459
www.gjms.co.in
Volume-1, Issue-1 Dec 2013

भासकालीन समाज में प्रचलित नारियों से संबंधित लोकमान्यताऐ तथा जनविश्वास

तरन्नुम खान
(शोध छात्रा)
संस्कृत पालि एवं प्राकृत विभाग
रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय जबलपुर (म0प्र0)

सारांश

महाकवि भास प्राप्त संस्कृत साहित्य में सर्वप्राचीन तथा सुप्रसिध्द नाटककार है।आपका समय ई.पू. चौथी शताब्दी मान्य है।, भास के तेरह नाटक है, जो 'त्रिवेन्द्रम प्लेज' के नाम से मशहूर है। महाकवि भास की रचनाओं का सामाजिक क्षेत्र अत्यंत वैविध्यपूर्ण है जिसमें व्यक्ति के जीवन के प्रत्येक पक्ष को समाहित किया गया है। तत्कालीन समाज में लोक मान्यताओं तथा जनविश्वासों का महत्त्वपूर्ण स्थान था। भासकालीन नारियॉ ज्योतिष्य, शकुन, आकाशवाणी, शाप, स्वप्न, औषध, प्रतिसरा तथा भाग्य में विश्वास व आस्था रखती थीं।

शब्दकोश :- वैविध्यपूर्ण, औषध।

प्रास्तावना

स्वप्नवासवदत्तम् रूपक की नायिका महारानी वासवदत्ता ज्योतिष्य की भविष्यवाणी पर विश्वास कर दासी बनकर जीवन जीने के लिये तैयार हो जाती है। ऋषि शाप को पूर्ण करने के लिये महारानी कैकेयी पति की मृत्यू व वैधव्य को तथा महारानी सूचेतना श्वपाकत्व को अंगीकार कर लेती है। धात्री आकाशवाणी पर विश्वास कर अविमारक से मिलकर, अविमार व कुरंगी के मिलन का उपाय करती है। स्वप्न में अशुभ दर्शन नारियों को विचलित कर देते थे नारियॉ औषध के प्रयोग द्वारा सपत्नी मर्दन तथा सदैव सौभाग्यवती रहने का विश्वास रखती थीं। तत्कालीन नारियॉ भाग्यवादी थीं। वे भाग्य को ही सुख और दुःख का कारण मानती थीं।

भासकालीन समाज में प्रचलित नारियों से संबंधित

लोकमान्यताऐ तथा जनविश्वास

आद्य नाटककार महाकवि भास संस्कृत साहित्य के दैदीप्यमान रत्न हैं। उनका समय ई.पू. चौथी शताब्दी माना गया हैं। 'त्रिवेन्द्रम प्लेज' के नाम से प्रसिध्द भास के त्रयोदश रूपक इस प्रकार है – **1. प्रतिमा नाटक 2. अभिषेक नाटक 3. पंचरात्रम् 4. मध्यम व्यायोग 5. कर्ण भारम् 6. दूतवाक्यम् 7. दूतघटोत्कच 8. उरूभगंम् 9. बालचरितम् 10. प्रतिज्ञा यौगन्धरायण 11. स्वप्नवासवदत्तम् 12. चारूदत्तम् 13. अविमारक।** इन तेरह नाटकों की कथावस्तु रामायण, महाभारत, कृष्ण कथा, उदयन कथा तथा लोक कथाओं पर आधारित है। महाकवि भास की रचनाओं का सामाजिक क्षेत्र अत्यंत वैविध्य पूर्ण है।, जिसमें व्यक्ति के जीवन के प्रत्येक पक्ष को समाहित किया गया है। तत्कालीन समाज मे लोक मान्यताओं तथा जनविश्वासों का महत्त्वपूर्ण स्थान था। भासकालीन नारियॉ ज्योतिष्य, शकुन, आकाशवाणी , शाप, स्वप्न, औषध, प्रतिसरा तथा भाग्य में विश्वास तथा आस्था रखती थीं।

ब) लोक विश्वास एवं मान्यताऐं –

i. ज्योतिष्य –

तत्कालीन समाज में नारियाँ सिद्ध ज्योतिष्यों की भविष्यवाणियों पर विश्वास करती थीं। स्वप्नवासवदत्तम् में पुष्पक तथा भद्र आदि ज्योतिष्य आचार्य उदयन के विषय में भविष्यवाणी करते हैं कि पद्मावती उदयन की महारानी होगी–

पुष्पकभद्रादि भिरादेशिकैरादिष्टा स्वामिनो देवी भविष्यतीति।[1]

इसी भविष्यवाणी पर विश्वास कर महारानी वासवदत्ता दासी बनकर अपना जीवन व्यतीत करने के लिये तैयार हो जाती है। वासवदत्ता ज्योतिष्यों की भविष्यवाणी पर विश्वास करके ही यौगन्धरायण की योजना में अपना सहयोग देती है जिससे यौगन्धरायण की योजना सफल होती है।

ii. शकुन –

शकुन का अर्थ होता है – सगुन, लक्षण, शुभाशुभ बतलाने वाले चिन्ह।[2] भास कालीन समय में नारियों के द्वारा शकुन विश्वास किया जाता था–

सीता – मा खलु मा खल्वार्यपुत्रोऽमङ्गलं भणत[3]

सीता – उज्झिताभिषेकस्यार्यपुत्र स्याममङ्गलमिव में प्रतिभाति[4]

बालचरितम् में देवकी कृष्ण के जन्म के समय होने वाले शुभ शकुनों को पुत्र की महानता सूचित करने वाला मानती है–

देवकी - ....पुत्रकस्य में महानुभावभावत्वं सूचयिष्यन्ति जन्मसमय समुद्रभूतानि महानिमित्तानि प्रत्यक्षीकुर्वत्यपि।[5]

इस प्रकार हम देखते हैं कि तत्कालीन नारियाँ शकुन विश्वास करती थीं।

iii. आकाशवाणी -

भास युगीन नारियाँ आकाशवाणी में विश्वास किया करती थीं। अविमारक में धात्री का आकाशवाणी पर विश्वास दर्शाया गया है।[6]

iv. शाप -

तत्कालीन नारियाँ शाप में विश्वास क्रिया करती थीं। प्रतिमानाटक में कैकेयी ऋषि शाप को अवश्यम्भावी कहती है।[7] कैकेयी दशरथ के ऋषि शाप को पूर्ण करने के लिये ही उनसे अपना विवाह शुल्क माँगती है, जिससे राम वन चले जाते हैं और पुत्र वियोग में तड़प-तड़प कर दशरथ अपने प्राण त्याग देते हैं। अतः ऋषि शाप को पूर्ण करने के लिये कैकेयी पति दशरथ की मृत्यु और वैधव्य तक को अंगीकार कर लेती है।[8] ऋषिशाप की भवितव्यतावश कैकेयी को ऐसे कार्य करने पड़ते हैं। इसी प्रकार सीता हरण के समय क्रोधवश रावण को शाप देने के लिये उद्यत हो जाती है।[9] सुचेतना ऋषि ज्ञाप के कारण सपरिवार श्वपाकत्व को प्राप्त हो जाती है।[10]

अतः तत्कालीन समाज में नारियाँ शाप में विश्वास करती थीं तथा कभी-कभी क्रोधवश दूसरों को शाप भी दे देती थीं।

v. स्वप्न -

तत्कालीन नारियों की स्वप्न दर्शन के शुभ और अशुभ परिणामों में आस्था थी। स्वप्न में उन्हें भविष्य में घटित होने वाली घटनाओं के संकेत प्राप्त होते थे। प्रतिज्ञायौगन्धरायण में नटी स्वप्न में अपने जातिकुल अर्थात् मायके वालों की अस्वस्थता देखकर चिंतित हो जाती है। वह अपने पति से उनके कुशलक्षेत्र जानने के लिये किसी पुरूष को अपने मायके भेजने का आग्रह करती है-

"अद्य मया स्वप्ने ज्ञातिकुलस्यास्वास्थ्यमिव दृष्टम्। तदिच्छाम्यार्येण कुशल विज्ञान निमित्तं कञ्चित् पुरूषं प्रेषयितुम्।"[11]

अतः नारियाँ स्वप्न दर्शन के शुभाशुभ परिणामों में आस्था रखती थीं।

vi. औषध -

भासयुगीन नारियाँ औषध अथवा जड़ी-बूटी के प्रभाव पर विश्वास करती थीं। स्वप्नवासवदत्तम् में विवाह की माला के ग्रंथन के समय फूलों के साथ उसमें औषधी का भी ग्रंथन किया जाता था। माला में 'अविधवाकरण औषधी' का प्रयोग इस

विश्वास के साथ किया विवाह करने वाली कन्या सदैव सौभाग्यवती (सुहागन) रहें। पद्मावती की विवाह माला में इस औषधी को बारम्बार गूँथे जाने का उल्लेख आया है-

वासवदत्ता - इदं बहुशो गुम्फितव्यं मह्यं च पद्मावत्यै च।[12]

इस औषधी के अतिरिक्त 'सपत्नी मर्दन' नामक औषधी का भी उल्लेख आया है। कन्या का विवाह यदि पहले से विवाहित पुरूष से होता था तो कौतुक माला में 'सपत्नीमर्दन' जड़ी लगायी जाती थी। पद्मावती के उदयन से विवाह के समय उदयन की ज्येष्ठा पत्नी महारानी वासवदत्ता की मृत्यु सभी को ज्ञात थी इसीलिए इस औषध को माला में नहीं लगाया गया था-

वासवदत्ता - इदं न गुम्फितव्य

चेटी - कस्मात?

वासवदत्ता - उपरता तस्य आर्या, तन्निष्प्रयोजमिति।[13]

इस प्रकार तत्कालीन नारियाँ औषध के प्रभाव पर विश्वास करती थी।

vii. प्रतिसरा &

शासकालीन समाज में नारियों के द्वारा पुरूषों को विपत्ति या संकट से बचाव के लिये प्रतिसरा रक्षा करण्डक (रक्षा सूत्र) दिया जाता था। यह रक्षासूत्र पूजन व अनुष्ठान के द्वारा सभी वधुओं (सौभाग्यवती स्त्रियों) के हाथों से स्पर्श किया हुआ होता था। प्रतिज्ञायौगन्धरायण में जब उदयन की माता को यह सूचना प्राप्त होती है कि महासेन प्रद्योत नीले हाथी की रचना कर उदयन को छलना चाहता है तब वह प्रतीहारी के हाथों प्रतिसरा उदयन की रक्षा के निमित्त यौगन्धरायण के पास भेजती है-

.....प्रतिसरा सर्ववधूजनहस्तात त्वर्यत इति भर्तृमाता आह।[14]

अतः शासकालीन नारियों के द्वारा यह विश्वास किया जाता था कि यह प्रतिसरा पुरूषों की संकट या विपत्ति में रक्षा करेगा।

viii. भाग्य -

भासकालीन नारियाँ भाग्यवादी हुआ करती थीं। उनका भाग्य में अत्याधिक विश्वास था। वे भाग्य को ही सुख और दुःख का कारण मानती थीं। वासवदत्ता अपने समस्त दुःखों का कारण भाग्य को मानती है[15] तपोवन में पद्मावती याचक के उपस्थित होने पर इसे भाग्य की कृपा मानती है-

दिष्टया सफलं में तपोवनाभिगमनम्।[16]

प्रतिमानाटक के पञ्चम अंक में काञ्चन मृग दिखलायी देने पर सीता इसे राम का अहोभाग्य मानती हैं- **सीता - दिष्टयाऽऽर्यपुत्रो वर्धते।**[17] पति राम से वियुक्त रावण की लंका में अपहृत सीता स्वयं

को मन्दभागी कहती है- **सीता - हा धिग् अतिधीरा खलवस्मि मन्दभागा।**[18]

इसी प्रकार गांधारी, मालवी और पौरवी, देवकी तथा गणिका वसंतसेना भाग्यवादी नारियाँ है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1.भासनाटकचक्रम (महाकवि भास के संपूर्ण नाटकों का संकलन) स्वप्नवासदत्तम्, प्रथम अंक, पृष्ठ संख्या 17 तथा षष्ठ अंक पृष्ठ 168, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, संस्करण वर्ष - 2002

2.संस्कृत हिन्दी शब्दकोश - वामन शिवराम आप्टे, पृष्ठ संख्या 1091, रॉयल बुक डिपो, दिल्ली, सप्तम संस्करण - 2011

3.भासनाटकचक्रम (महाकवि भास के संपूर्ण नाटकों का संकलन) प्रतिमा नाटक, प्रथम अंक पृष्ठ संख्या 34, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, संस्करण वर्ष - 2002

4.वही, पृष्ठ संख्या 35

5.वही बालचरितम्, प्रथम अंक, पृष्ठ संख्या 7

6.वही अविमारक, द्वितीय अंक, पृष्ठ संख्या 38

7.वही, प्रतिमा नाटक षष्ठ अंक, पृष्ठ संख्या 193

8.वही, पृष्ठ संख्या 191-194

9.वही, पृष्ठ संख्या 171

10.वही, अविमारक, 6/6 पृष्ठ संख्या 152

11.वही, प्रतिज्ञा यौगन्धरायण, प्रथम अंक, पृष्ठ संख्या 4

12.वही, स्वप्नवासवदत्तम् तृतीय अंक, पृष्ठ संख्या 67

13.वही,

14.वही, प्रतिज्ञा यौगन्धरायण, प्रथम अंक, पृष्ठ संख्या 10

15.वही, चतुर्थ अंक, पृष्ठ संख्या 90

16.वही, स्वप्नवासवदत्तम्, प्रथम अंक, पृष्ठ संख्या 24

17.वही, प्रतिमानाटक पंचम अंक, पृष्ठ संख्या 165

18.वही, अभिषेक नाटक द्वितीय अंक, पृष्ठ संख्या 23